‘भारत दुर्दशा’: कथ्य एवं शिल्प

डॉ. गरिमा तिवारी
(सहायक प्राध्यापक)
हिंदी विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी - ८४५४०१, बिहार
E-mail: garimatiwari@mgcub.ac.in

HIND4007: हिंदी नाटक एवं रंगमंच (Unit-3)

विषय-सूची

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र: सामान्य परिचय
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र: एक नाटककार के रूप में
- 'भारत दुर्दशा' का कथ्य
- 'भारत दुर्दशा' की अभिनेयता
- 'भारत दुर्दशा' का शिल्प
- निष्कर्ष

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र: सामान्य परिचय

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन काल सन 1850-1885 तक माना जाता है।
- वह हिंदी साहित्य में आधुनिक हिंदी गद्य के जनक माने जाते हैं।
- उनका मूल नाम 'हरिश्चन्द्र' है और 'भारतेन्दु' उनकी उपाधि है।
- उन्होंने ब्रज भाषा एवं खड़ी बोली दोनों में रचनाएँ कीं।
- भारतेन्दु जी ने साहित्य की विविध विधाओं जैसे नाटक, निबन्ध, काव्य और वैचारिक लेखन को अपनी लेखनी से समृद्ध किया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र: एक नाटककार के रूप में

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक हिंदी गद्य का जनक और आधुनिक भाव बोध का प्रथम प्रेरणास्रोत माना जाता है।

- वे एक युग की समूची चेतना की अभिव्यक्ति करने के साथ ही एक युग प्रवर्तक रचनाकार भी हैं।

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से ही हिंदी नाटक की विकास यात्रा प्रारंभ होती है जिसका उल्लेख करते हुए डॉ. नामवर सिंह कहते हैं -"आधुनिक भारतीय भाषाओं में हिंदी को ही यह गौरव प्राप्त है कि आधुनिक काल का इसका इतिहास नाटक से शुरु होता है। 19 वीं सदी के इतिहास में भारतेन्दु ने नाटक से शुरु किया।"

- भारतेन्दु जी के आगमन के पूर्व हिंदी नाट्य विधा, रंगमंच का कोई व्यवस्थित स्वरुप उपलब्ध नहीं था। अतः उन्होंने नाट्य विधा को एक पूर्ण आन्दोलन की तरह लिया। उन्होंने स्वयं नाटक लिखे, उनका अभिनय किया और उनकी समीक्षाएँ भी प्रस्तुत की।

- उन्होंने मौलिक और अनुदित दोनों प्रकार की नाट्य रचनाएँ की, जिनकी कुल संख्या 17 मानी जाती है। उनके मौलिक नाटक हैं – वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, सत्य हरिश्चन्द्र, प्रेम योगिनी, विषस्य विषमौषधम, चन्द्रावली, भारत दुर्दशा, भारत जननी, नील देवी, अंधेर नगरी, सती प्रताप।

  अनुदित नाटक – विद्या सुन्दर, रत्नावली, पाखंड विडंबन, धनञ्जय विजय, मुद्रा राक्षस, दुर्लभ बंधू, कर्पुर्मंजरी।

- उन्होंने अनुवाद द्वारा संस्कृत, अंग्रेजी और बांग्ला के नाट्य-साहित्य से भी हमें परिचित कराया।

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भारतीय नाट्य परंपरा और लोक नाटकों से प्रभाव ग्रहण कर नाट्य संरचना में नवीन सर्जनात्मक मोड़ पैदा किए और नाटक के नवीन सौंदर्य की परिकल्पना की।

- उन्होंने 'नाटक' विषयक निबन्ध लिखकर नाट्य लेखन संबंधी अपनी मौलिक सोच और चिंतन को प्रस्तुत किया।

- वे पारसी नाटक कंपनियों की सस्ती लोकप्रियता से अत्यंत क्षुब्ध थे और उनके विरोध में हिंदी का अपना रंगमंच विकसित किया। परंतु वे उन नाट्य मंडलियों के प्रभाव से पूर्णतया मुक्त नहीं हुए।

- शीतला प्रसाद त्रिपाठी द्वारा लिखित 'जानकी मंगल' नाटक जो '*बनारस थिएटर*' में खेला गया, उसमें उन्होंने अभिनय भी किया।

- भारतेन्दु जी की प्रेरणा से ही काशी में 'नेशनल थिएटर' की स्थापना हुई।

- वे नाटकों की दृश्यात्मकता, काव्यत्व और उनके प्रत्यक्ष प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता के प्रशंसक थे।

- भारतेन्दु जी "काव्य के सर्वगुण संयुक्त खेल को नाटक कहते हैं"।

- उन्होंने नाट्य विधा को सामाजिक रूपांतरण की प्रेरणा के रूप में प्रयोग किया। अपने नाटकों में उन्होंने विविध विषयों और शैलियों द्वारा राष्ट्रीय और सांस्कृतिक जागरण का शंख फूंका, देश की वर्तमान कारुणिक दशा का चित्रण किया एवं हास्य और व्यंग्य द्वारा देशवासियों को जगाने का प्रयास भी किया।

- भारतेन्दु जी ने संस्कृत नाट्य परंपरा का हूबहू अनुकरण नहीं किया। वे नाटकों में अर्थ प्रकृति, कार्यावस्थाओं और पञ्चसंधियों के पक्षपाती नहीं थे।

- उन्होंने अपने नाटकों में विविध प्रकार के पात्रों की सर्जना की।

- रंगकर्मी, नाट्यकर्मी, अभिनयकर्मी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक नाटकों की रचना की और हिंदी नाट्य साहित्य को एक नवीन दिशा प्रदान की।

'भारत दुर्दशा' का कथ्य

- भारत दुर्दशा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा 6 अंको में लिखा गया एक विचार प्रधान नाटक है जिसे डॉ. बच्चन सिंह ने "*हिंदी का पहला राजनीतिक नाटक माना है*" ।

- इस नाटक के माध्यम से भारतेन्दु जी ने भारत की दुर्दशा के लिए उत्तरदायी कारणों (आतंरिक एवं बाह्य) का उल्लेख किया है।

- उन्होंने भारत की दुर्दशा का बाह्य कारण अंग्रेजी सत्ता की शोषणकारी नीति और आतंरिक कारण धर्म, संतोष और आलस्य, मदिरा, रोग, अज्ञान इत्यादि को बताया हैं।

- धर्म के आधार पर बंटा हुआ देश कभी भी संगठित होकर विदेशी सत्ता का सामना नहीं कर सकता इसका संकेत भारतेन्दु जी इस नाटक के माध्यम से करते हैं –

शैव शाक्त वैष्णव, अनेक मत, प्रगटि चलाए,
जाति अनेकन करि, नीच अरु ऊँच बनायो।

- भारत दुर्दशा के आतंरिक कारणों में भारतेन्दु जी संतोष और आलस्य को भी गिनते हैं और कहते हैं कि 'संतोषम परमं सुखं' की अवधारणा और आलस्य ने भारत वर्ष का बहुत अपकार किया है लेकिन फिर भी भारतवासी सचेत नहीं होते। वे सोचते हैं कि -

दुनिया में हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा
मर जाना पै उठ के कहीं जाना नहीं अच्छा।

- इसी प्रकार उन्होंने मदिरा, व्याधि, अंधकार, अज्ञानता आदि को भी भारत वर्ष की अवनति का आतंरिक कारण बताया है और इससे मुक्ति का सन्देश भी दिया है।

- भारत दुर्दशा नाटक का मूल कथ्य भारत-दुर्दशा द्वारा अपनी फ़ौज के साथ भारत पर आक्रमण कर देना और उसे असहाय बना देना तथा अंत में भारत भाग्य द्वारा आत्महत्या कर लेना है। लेकिन प्रतीकात्मक पात्रों द्वारा भारतेन्दु जी भारतवासियों को परतंत्र भारत की कारुणिक स्थिति से अवगत कराते हैं और उनमें राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना को जगाने का प्रयास करते हैं।

- इस नाटक के माध्यम से भारतेन्दु जी ने भारतीय मध्य वर्ग (बुद्धिजीवी वर्ग) के दोमुंहे चरित्र को भी उजागर किया है।

- भारतेन्दु जी औपनिवेशिक भारत के आधुनिकीकरण के लिए अंग्रेजी राज्य के योगदान की प्रशंसा करते हैं तो उनकी शोषणकारी नीति का पर्दाफाश भी करते हैं –

अँगरेज़ राज सुख साज सजे सब भारी

पै धन विदेश चली जात इहै अति ख्वारी।

- भारत दुर्दशा नाटक के अंत में 'भारत भाग्य' की आत्महत्या दिखाकर भारतेन्दु जी भारतवासियों के भाग्यवाद पर करारा प्रहार करते हैं।

- इस नाटक के माध्यम से भारतेन्दु जी भारतवासियों को उनकी वास्तविक स्थिति से अवगत कराकर उन्हें भविष्य के लिए जागरूक एवं सजग बनाने का प्रयास करते हैं।

'भारत दुर्दशा' की अभिनेयता

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने आम जनमानस तक अपने विचारों के सम्प्रेषण का माध्यम नाटकों को बनाया।

- उनके अधिकांश नाटक रंगमंच को दृष्टि में रखकर ही लिखे गए हैं अतः उनकी अभिनेयता निर्विवाद है।

- भारत दुर्दशा 6 अंको का एक लघु नाटक है। इस नाटक में पात्रों की संख्या सीमित है, उनके संवाद प्रभावशाली हैं, लम्बे कथन व गीत यद्यपि इसकी अभिनेयता को थोड़ा कमजोर बनाते हैं लेकिन इसके बावजूद यह नाटक रंगमंच की दृष्टि से भारतेन्दु जी के सफलतम नाटकों में से एक है।

'भारत दुर्दशा' का शिल्प

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों की वास्तविक शक्ति उनके भाषायी प्रयोग की कुशलता में निहित है।

- उनकी भाषा बने बनाये ढांचे की भाषा नहीं है, वह स्वतः स्फूर्त है, वह छंद और लय के अनुशासन से परिपूर्ण है, उसमें अभिनय है, ऊर्जा है और विभिन्न कलाओं का समावेश है।

- भारतेन्दु जी ने भारत दुर्दशा में आम बोलचाल की सहज, सरल एवं पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। प्रत्येक पात्र की अपनी भाषा है। जैसे बंगाली पात्र बांग्ला बोलता है – **"प्रश्न एई है जे हम लोग, उसका दमन करने शाकता"** ।

- भारतेन्दु जी ने शब्दों की सहजता एवं सरलता पर विशेष बल दिया है। उन्होंने आम बोलचाल की भाषा के अलावा अरबी, फारसी, संस्कृत के शब्दों का भी प्रयोग किया है जैसे "डिसलॉयल्टी, खाक, मुएं" इत्यादि।

- इस नाटक में उन्होंने लोकोक्तियों, मुहावरों, किस्सागोई का प्रयोग कर भाषा को और सजीव बना दिया है जैसे – **“एक जिंदगी हज़ार नेयामत है”**।

- इस प्रकार हम देखते हैं कि लोक जीवन, लोक भाषा, समकालीन चेतना और जीवनानुभव में गहरी पैठ के कारण भारत दुर्दशा नाटक में भारतेन्दु जी ने लय, टोन, भाषा-शक्ति का बेजोड़ उदाहरण प्रस्तुत किया है।

- इस नाटक में उन्होंने प्रतीकात्मक एवं व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। पूरा नाटक बिम्बों एवं प्रतीकों में लिखा गया है। लावनी का प्रयोग इस नाटक की रीढ़ है।

- इस प्रकार हम देखते हैं कि शिल्प की दृष्टि से भारत दुर्दशा एक बेजोड़ नाटक है।

निष्कर्ष

- "भारत दुर्दशा" के माध्यम से भारतेन्दु जी ने तत्कालीन भारत वर्ष के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक यथार्थ का जीवंत दस्तावेज प्रस्तुत किया है।

- भारत वर्ष की तत्कालीन कारुणिक दशा का कारण भारतेन्दु जी अंग्रेजी साम्राज्य की दमनकारी, शोषणकारी नीतियों और भारतवासियों के पारस्परिक कलह, फूट, आलस्य, रोग, मदिरा को बताते हैं तथा भारतवासियों को इन सब कमजोरियों से मुक्त होने का परामर्श देते हैं।

- भारतेन्दु जी प्रतीकात्मक पात्रों के माध्यम से जनता को उनकी वास्तविक समस्याओं से परिचित कराते हैं और उन्हें जगाने के लिए भारत के प्राचीन गौरवशाली अतीत का स्मरण कराते हैं –

सबके पहिले जेहिं ईश्वर धन-बल दीनो
सबके पहिले जेहिं सभ्य विधाता कीन्हो।

- इस नाटक ने निश्चित रूप से निराश, हताश भारतीयों की लक्ष्यहीन पत्रोंमुखी सोच को एक नवीन सकारात्मकता से ओत-प्रोत किया और उनमें राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का संचार किया।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1. भारत दुर्दशा – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
2. हिन्दी नाटक – बच्चन सिंह
3. हिंदी नाटक उद्भव और विकास – डॉ. दशरथ ओझा
4. 20 वीं शताब्दी का हिंदी नाटक और रंगमंच – गिरीश रस्तोगी

धन्यवाद